IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 23, Issue 1, Ver. 10 (January. 2018) PP 103-105
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

वैदिक एवं जैन दर्शन का सूक्ष्म अध्ययन
'' धारयति इति धर्मः''

शोध निदेशक – सुकदेव बाजपेयी

शोधार्थी – कीर्ति जैन
संस्कृत विभाग
स्वामी विवेकानंद वि.वि सागर

सारांश –

वैदिक द र्शन वह द र्शन है, जो वेदों में आस्था और वि वास रखता है। वेदों को प्रामाणिक और सर्वोपरि ग्रन्थ मानने वाले द र्शन को वैदिक द र्शन कहते हैं। उस वैदिक द र्शन की छह भााखाएं प्रमुख हैं, जिन्हें ाड्द र्शन के नाम से भी जाना जाता है।

वैदिक द र्शन को प्रायः हिन्दू द र्शन या सनातन धर्म भी अक्सर कहा जाता है, किन्तु वास्तव में यथोचित नाम तो वैदिक द र्शन ही है, क्योंकि हिन्दू कहने पर उसमें भी समस्त भारतीय द र्शन गर्भित होते हैं, जिनमें जैन एवं बौद्ध आदि भी सम्मिलित हैं।

इसी प्रकार सभी प्राचीन धर्म–द र्शन स्वयं को सनातन भी कहते आये हैं, अतः निर्विवाद रूप से वैदिक द र्शन की निम्न छह भााखायें मानी जाती हैं, जो इसप्रकार है–

1. सांख्य
2. योग
3. मीमांसा
4. वेदान्त
5. न्याय
6. वै ोशिक

विषलेशण

सांख्यदर्शन–

सांख्यद र्शन वैदिक द र्शनों में सबसे प्राचीन द र्शन है। भोश वैदिक द र्शनों का उद्भव इस द र्शन के उपरान्त ही हुआ माना जाता है। सांख्य द र्शन के प्रणेता कपिल मुनि माने जाते हैं, यही प्रमाण महाभारत के भाान्तिपर्व में भी पाया जाता है–

सांख्यदर्शन की जैनदर्शन के साथ तुलना–

सांख्यद र्शन में माने गये 25 तत्वों में से मूलभूत तत्व दो हैं– प्रकृति और पुरुश। वास्तव में ये जैनद र्शन के लिए नये भाब्द नहीं हैं। जैनद र्शन में भी प्रकृति का अर्थ है– कर्मप्रकृति। और आत्मा के लिए पुरुश भाब्द का प्रयोग आचार्य अमृतचन्द्र ने अपने पुरुशार्थसिद्धि–उपाय नामक ग्रन्थ के भलोक संख्या 9 में किया है– अस्ति पुरुशि चदात्मा।

इससे यह सिद्ध होता है कि जिस आत्मा को सांख्यद र्शन पुरुश कहता है, उसे जैनद र्शन में भी पुरुश के नाम से जाना जाता है। वास्तव में स्त्री और पुरुश अथवा नर एवं मादा– ये दो पुरुशवेद और स्त्रीवेद कशाय के कारण अथवा नामकर्म के कारण होने वाले लिंगभेद न होकर एक आत्मा के लिए वि ाश्ट अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं।

योगदर्शन–

सांख्यद र्शन द्वारा माने गये 25 तत्वों में एक ई वर तत्व को वि ोश रूप से मानने के कारण योग द र्शन उससे पृथक् माना जाता है। भोश 25 तत्व दोनों ही द र्शनों में समान रूप से स्वीकृत हैं।

इस योगद र्शन के प्रवर्तक महर्शि पतंजलि माने जाते हैं।

योगदर्शन की जैनदर्शन के साथ तुलना–

योगद र्शन की विचारधारा का जैनद र्शन से बहुत अधिक साम्य सिद्ध होता है। जैन द र्शन के दिगम्बर और भवेताम्बर दोनों सम्प्रदायों के आचार्यों ने योग पर अत्यन्त विस्तारपूर्वक प्रका ा डाला है। भवेताम्बर सम्प्रदाय में इस विशय का और भी अधिक विस्तृत वर्णन अनेक ग्रन्थों में भेद–प्रभेद सहित उपलब्धि होता है। उनमें से हरिभद्रसूरि, हेमचन्द्रसूरि और उपाध्याय यथोविजय के ग्रन्थ वि ोश रूप से उल्लेखनीय है।

सांख्य–योग दर्शनों के साथ जैनदर्शन की तुलना–

सांख्य और योग द र्शनों में परस्पर काफी समानता होने के कारण उन दोनों को एक साथही जैनद र्शन के साथ तुलनात्मक रूप से इसप्रकार देखा जा सकता है–

1. दोनों ही द र्शनों में आत्मा को प्रकृति या जड़ पदार्थों से भिन्न माना गया है।
2. दोनों ही द र्शनों में उसे चैतन्यस्वरूप ही स्वीकार किया गया है।

3. दोनों ही द र्शनों में चैतन्य को आत्मा का मूल स्वभाव स्वीकार किया गया है, न्याय वै ोशिकों के समान आगन्तुक गुण नहीं माना है।
4. दोनों ही द र्शनों में आत्मा की संख्या अनन्त मानी गई हैं।

न्याय दर्शन–

वैदिक द र्शनों में न्याय–वै ोशिक– इन दोनों द र्शनों की मान्यताएं प्रायः समान हैं। अतएव अधिकां ा विद्वानों ने इन दोनों द र्शनों का अध्ययन एक साथ प्रस्तुत किया है। न्याद र्शन के प्रवर्तक अक्षपाद गौतम माने जाते हैं ि ाव या महे वर को सृश्टि का कर्ता मानने के कारण इस द र्शन को भौव या माहे वर द र्शन भी कहते हैं।

न्यायदर्शन के साथ जैनदर्शन की तुलना–

जैनद र्शन में भी ोड ा पदार्थ के स्थान पर ोड ा कारण भावनाओं का प्रसंग प्राप्त होता है–द र्शन वि ाुद्धि, विनयसम्पन्नता, भीलव्रतेश्वनतिचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, अभीक्ष्णसंवेग, भाक्तितस्त्याग, भाक्तितस्तप, साधु समाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आव यकापरिहाणि, मार्गप्रभावना और प्रवचन–वत्सलत्व ये तीर्थंकर प्रकृति के उपार्जन के कारणभूत 16 पदार्थों का उपदे ा दिया है, अतः जैनद र्शन की तुलना इस संदर्भ में ोड ापदार्थवादी के रूप में की जा सकती है।

वैशेषिक दर्शन–

वै ोशिक द र्शन के प्रवर्तक महर्शि कणाद माने जाते हैं, अतः इस द र्शन का नाम काणाद द र्शन भी है। वि ोश पदार्थ की प्रधानता के कारण इस द र्शन को 'वै ोशिक द र्शन' कहते हैं। कणाद ऋशि उलूक ऋशि के पुत्र थे, अतः इस द र्शन को'औलूक्य द र्शन' के नाम से भी जाना जाता है।

न्याय–वैशेषिक दर्शन के साथ जैनदर्शन की तुलना–

न्याय और वै ोशिक– दोनों द र्शनों में परस्पर घनिश्ठ सम्बन्ध होने के कारण उन दोनों के साथ जैनद र्शन की तुलना करते हुए इनमें समानता और असमानता को इसप्रकार रेखांकित किया जा सकता है।

1. दोनों ही द र्शन आत्मा को एक ऐसा अभौतिक द्रव्य मानते हैं जो भारीर, इन्द्रियां मन आदि सर्व भौतिक द्रव्यों से अत्यन्त भिन्न हैं।
2. दोनों ही द र्शन संख्यापेक्षा अनेक आत्माएं स्वीकार करते हैं, कहते हैं कि प्रत्येक भारीर में भिन्न–भिन्न आत्मा है।
3. दोनों ही द र्शन आत्मा को अपने–अपने कर्मों का कर्ता एवं भोक्ता मानते हैं।
4. दोनों ही द र्शन आत्मा को स्वभावतः अमूर्तिक मानते हैं। यद्यपि जैनद र्शन मूर्तामूर्त मानता है।

मीमांसा दर्शन–

मीमांसा का अर्थ है– व्याख्या, यथार्थ वर्णन, समीक्षा, विचार विम ार्ा आदि। यह द र्शन पूर्णतयावेदों पर आधारित है और निरन्तर वेद वाक्यों की ही व्याख्या करने में समर्पित है। वेद के दो भाग माने गये हैं– मंत्र ब्रह्माणादि रूप पूर्वभाग और उपनिशद्रूप उत्तर भाग। मीमांसा द र्शन वेद के मंत्रब्रह्माणादि रूप पूर्व भाग पर आधारित है, अतः इसे पूर्वमीमांसा द र्शन कहते हैं। वेदान्त द र्शन जिसकी चर्चा आगे की जायेगी, वह उपनिशद्रूप उत्तर भाग पर आधारित है, अतः इसे उत्तर मीमांसा के नाम से भी जाना जाता है।

मीमांसादर्शन के साथ जैनदर्शन की तुलना–

मीमांसा और वेदान्त द र्शन एक सिक्के के ही दो पहलू हैं। जहां एक ओर मीमांसा को पूर्व वेदान्त और उत्तर मीमांसा को वेदान्त कहा जाता है, अतः इनमें कोई खास अन्तर नहीं है। दोनों ही वेदों पर आधारित द र्शन है। एक वेदों के पूर्व भाग को मानता है और दूसरा वेदों के उत्तर भाग को– इसप्रकार दोनों ही मूल वैदिक द र्शन कहलाते हैं।

वेदान्त दर्शन–

यह वेदों के उत्तर भाग उपनिशदों पर आधारित होने से उत्तर मीमांसा के नाम से भी जाना जाता है। वेदान्त द र्शनको वेदान्त इसलिए कहा जाता है कियह वेद के अन्तिम भाग उपनिशदों पर आधारित है। वेदान्त द र्शन के प्रवर्तक महर्शि बादरायण माने जाते हैं, क्योंकि उन्होंने ही सर्वप्रथम इस द र्शन हेतु उपनिशदों के आधार पर ब्रह्मसूत्र का निर्माण किया था, जिसमें लगभग साढ़े पांच सौ सूत्र हैं।

वेदान्त दर्शन और जैनदर्शन की तुलना–

आत्मा चैतन्यस्वरूप है, उसका यह चैतन्य जागृत, सुप्त आदि सभी अवस्थाओं में पाया जाता है।

1. चैतन्य आत्मा का आगन्तुक गुण न होकर स्वाभाविक गुण है।
2. दोनों ने मोक्ष को भावात्मक सत्ता के रूप में माना है, कल्पना नहीं।
3. संख्या की अपेक्षा दोनों ने अनेक आत्माओं की सत्ता मानी है।

4. आत्मा स्वयंकृत कर्मों का कर्ता–भोक्ता है।

निष्कर्ष –

इस प्रकार इस अध्यन में वैदिक द र्शनों की सांख्यादि छह प्रमुख भाखाओं का समग्र विवेचन प्रस्तुत करते हुए उनकी मान्यतायें का भी विवेचन करने का प्रयास किया गया है, साथ ही इन वैदिक द र्शनों के साथ जैनद र्शन का सूक्ष्म तुलनात्मक अध्ययन भी हुआ है। इससे हमें विविध द र्शनों के मध्य समग्र तुलना का अवसर प्राप्त होता है और आदि–जिज्ञासाओं के समाधान के सूत्र भी प्राप्त होते हैं।

अतः हम निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते है कि इस लोक में जिसका भी जन्म होता है, वह परलोक में मोक्ष की प्राप्ति हो इसी भाव साथ तत्पर नेक कार्य को करता है चाहे जैन हो या वैदिक या अन्य मतान्तर अतः सभी धर्मो को मकसद एक ही है ''मोक्ष प्राप्ति''।

संदर्भ ग्रन्थ

1. श्वेताश्वेतरोपनिषद् 5/2
2. पुरूषार्थसिद्ध–उपाय, आचार्य अमृतचंद, श्लोक –9
3. भारतीय दर्शन में आत्मा और परमात्मा, डॉ वरीसागर जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली पृष्ठ 101
4. अप्पा सो परमप्पा, देवेन्द्र मुनि, पृष्ठ 39
5. मीमांसाश्लोकवर्तिक, श्लोक .10 पृष्ठ 4